

केन्द्रीय विद्यालय सिख लाईन्स, मेरठ कैंट (आगरा संभाग)

KENDRIYA VIDYALAYA SIKH LINES, MEERUT CANTT (AGRA REGION)

**Kendriya Vidyalaya Sikh lines Meerut Cantt (Ministry of HRD,
department of education, Government of India)**

CBSE affiliation number 2100023

CBSE school number 64011

kvsikhlinesmeerut@gmail.com

विद्यालय ई-पत्रिका नई दिशा



सत्र -2021 – 20 22

EDITORIAL BOARD 2021-22

PATRON

MR NAVAL SINGH

PRINCIPAL

CHIEF EDITOR

MS DIVYA KAPOOR

PGT, ENGLISH

ASSOCIATE EDITORS

DR RITU TYAGI

PGT, HINDI

MR K.C. VERMA

PGT, PHYSICS

MS UMA BHARGAVA

TGT, ENGLISH

MRS VIMLESH RAJ

TGT, SANSKRIT

MR VIKAS KUMAR

TGT, ARTS

MRS NEELAM KUMAR

PRT

MR AMIT KUMAR SHARMA

Computer Instructor

हमारे मार्गदर्शक



श्री चंद्रशेखर आज़ाद
उपायुक्त
आगरा संभाग



श्री एम् एल मिश्रा
सहायक आयुक्त
आगरा संभाग



ब्रिगेडियर आलिनंद
श्रीवास्तव
चेयरमैन



MESSAGE BY THE PRINCIPAL

"Education is not the learning of facts but the training of the mind to think".

-Albert Einstein

It is a matter of happiness that our vidyalaya is bringing out a new edition of e-magazine, 'Nai Disha'. A magazine is the mirror of the activities and achievements of the Vidyalaya and also it is a document reflecting the students' literal skills. It gives a platform to the students for showcasing their talent in the field of original writing. Original writing is a unique skill and to promote writing skills is the main purpose of publishing vidyalaya magazine. The variety and creativity of the articles published in the magazine represent the talent of the school children. The reflection of students' creativity is the epitome of the magazine .

I am sure that positive attitude, hard work, sustained efforts and innovative ideas exhibited by our young students will surely stir the mind of the readers. Nai Disha is a milestone that marks our growth, unfolds our imagination and gives life to our thoughts and aspirations.

I congratulate the editorial board on their tireless effort in bringing out this publication of the school magazine.

With best wishes.

Naval Singh

Principal

EDITORIAL

"What a great feeling it is to be among young people bubbling with creativity and enthusiasm !

What a great responsibility the elders of this country have to guide this tremendous energy in a constructive way for nation building."

This thought provoking view by the eminent scholar and Ex-President of India Dr A.P.J.Abdul Kalam is indicating the true worth of the students with the responsibility of the elders. Undoubtedly, students are like those tiny and tender saplings whose proper nurturing and pruning result into something worthwhile to stand and stare.

Reading ,writing,listening and speaking are those forever friends of man who not only acquaint him to something new and different but also enable them to do new and different.In this pursuit of doing something new and different when the power of mind ,heart and hand are joined together,an ordinary mind swings high and perform miracle. At the vidyalaya level such miraculous performers in the feature of creators and painters get space in the vidyalaya magazine.

For last more than one and a half year students are enclosed in their homes and are deprived of the real feel of the vidyalaya but somewhere their hobbies and talents were chiselled and nurtured by continuous practice and participation in various online competitions .We were surprised to view and review the number of the articles sent by our e-writers this time and while publishing their work we believe in the originality of their work and trust they have not followed the way of plagiarism. Good wishes to all the dear students to continue their creative pursuit to dazzle this planet.

Now,before I pen down, I extend my heartfelt gratitude to the worthy Principal Sir who has remained a constant source of inspiration and instruction to bring forth this magazine successfully. I am thankful to the editorial board for their assistance and cooperation in fabricating this magazine.

Anticipating your suggestion till next time have happy and healthy days with fruitful reading.....



DIVYA KAPOOR

PGT (ENGLISH)

हिंदी विभाग

****पेड़ लगाओ****

धरती की बस यही पुकार,
पेड़ लगाओ बारम्बार।
आओ मिलकर कसम ये खाएं,
अपनी धरती हरित बनाएं।
धरती पर हरियाली हो,
जीवन में खुशहाली हो।
पेड़ धरती की शान है,
जीवन की मुस्कान है।
पेड़-पौधों को पानी दें,
जीवन की यही निशानी दें।
आओ पेड़ लगाएं हम,
पेड़ लगाकर जग महका कर।
जीवन सुखी बनाएं हम,
आओ पेड़ लगाएं हम।

वाणिका अरोरा
कक्षा- 2 'ब'

भ्रष्टाचार का जाप – नहीं पाप
भ्रष्टाचारी के युग में
मुश्किल हुआ जीना।
लूट-कसोट कर पी जाते
मेहनत का खून-पसीना।
कोई लेता प्यार से
तो कोई दुर्व्यवहार से।
मुश्किल है बचके रहना
बढ़ते भ्रष्टाचार से।
भ्रष्टाचार की महामारी
ने पाँव पसारे जैसे कोरोना
अब गरीब किसान मजदूर
का लगा रहे रोग धोना
देख देख इसको अफसरों का
बड़ा ही खुश होना।
जिम्मेदार लोगों को
हुआ है चैन से सोना।
बस अब लगे भ्रष्टाचार
ही सबका बाप है।
बढ़ाते रहो जी भरकर
छोटा मोटा पाप है।
भले देश के लिए
यह भयंकर सांप है।
पर नेताओं और अफसर का
तो यह प्यारा जाप है।

प्राची पाल
VII A

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखलाए।
मात - पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।
कभी है शांत , कभी है धीर ,
स्वभाव में सदा गंभीर ,
मन में दबी रहे ये इच्छा ,
काश में उस जैसा बन पाता ,
जो मेरा शिक्षक कहलाता ।

नाम = गायत्री
कक्षा = 8 ब
अनुक्रमांक = 18

कोशिश कर हल निकालेगा

कोशिश कर, हल निकलेगा
आज नहीं तो, कल निकलेगा.
अर्जुन के तीर सा सध
मरुस्थल से भी जल निकलेगा.
मेहनत कर, पौधों को पानी दे
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा.
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे
फ़ौलाद का भी बल निकलेगा
जिंदा रख, दिल में उम्मीदों को
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा.
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की
जो है आज थमा-थमा सा, चल निकलेगा

- उन्नति, XC

हमारा विद्यालय

यह हमारा विद्यालय है,
शिक्षा का उत्तम आलय है।
पढते यहां हम सब बच्चे
नियम- रीति में हैं सब बच्चे।
इंग्लिश यहां सिखाई जाती है
हिंदी यहां पढाई जाती है।
गणित यहां समझाई जाती है
कला यहां सिखलाई जाती है।
शिक्षक सभी गुणी विद्वान
देते विद्या का नित दान।
भाईचारे की शिक्षा देते
देशभक्ति का पाठ पढाते।
यहां अनुभवी हैं सब शिक्षक
मानवता के जो हैं संरक्षक।
वे करते सबकी अच्छी देखभाल
उन्हें अनुशासन का है ख्याल।
खेलकूद में सबसे अच्छे
हमारे विद्यालय के बच्चे।
हमारे प्राचार्य सबसे अच्छे
कर्तव्य परायणी सीधी-सच्ची।
ये शिक्षा का उत्तम आलय है
यह हमारा विद्यालय है।

प्राची पाल
VII A

पानी है सफलता जो तुमको

तो खुद को तुम आजाद करो,
मत डरो किसी मुसीबत से
अपने हौंसले को फौलाद करो,
पानी है सफलता जो तुमको
तो खुद को तुम आजाद करो।
आजाद करो उन ख्यालों से
जो आगे न तुम्हें बढ़ने देते
जो कहीं बढाते कदम हो तुम
तो हर पल ही तुमको रोके,
मत डरो विचार नया है जो
उसी विचार को अपनी बुनियाद करो
पानी है सफलता जो तुमको
तो खुद को तुम आजाद करो।
आजाद करो उन रिवाजों से
जो बेड़ियाँ पाँव में हैं डाले
तोड़ दो उन दीवारों को
जो रोकते हैं सूरज के उजाले,
जिसे देखा न हो दुनिया ने
तुम ऐसा कुछ इजाद करो
पानी है सफलता जो तुमको
तो खुद को तुम आजाद करो।
आजाद करो उन लोगों से
जो तुम्हें गिराने पर हैं तुले
ऐसे लोगों की संगती से
कहाँ है किसी के भाग्य खुले,
जो करना है वो खुद ही करो
न किसी से तुम फ़रियाद करो
पानी है सफलता जो तुमको
तो खुद को तुम आजाद करो।

मंजिल पर जल्दी पहुँचने की कोशिश न कर

तू जिंदगी को जी
उसे समझने की कोशिश न कर।
सुंदर सपनों के ताने बाने बुन
उसमे उलझने की कोशिश न कर।
चलते वक्त के साथ तू भी चल
उसमें सिमटने की कोशिश न कर।
अपने हाथों को फैला, खुली हवा में साँस ले।
अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर।
मन में चल रहे युद्ध को विराम दे
खामखाह खुद से लड़ने की कोशिश न कर।
कुछ बाते भगवान पर छोड़ दे
सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर।
जो मिल गया उसी में खुश रह
जो सूकून छीन ले वो पाने कोशिश न कर
रास्ते की सुंदरता का लुप्त उठा
मंजिल पर जल्दी पहुँचने की कोशिश न कर।
रोहित संतोष थोरात
कक्षा=10 ब

किसान

भरे पेट जो सभी जनों का
माटी में फसल उगाता है,
भारत माता का लाल वही
अपना किसान कहलाता है।
आलस तनिक न तन में रहता
भय न कभी भी मन में रहता,
कोई भी विपदा आ जाए
हँसकर वह सब कुछ है सहता।
बस रहे सदा परिवार सुखी
जिसके संग उसका नाता है,
भारत माता का लाल वही
अपना किसान कहलाता है।
कष्ट न देती धूप दिवस की
ना अँधेरी रात डराती है,
डटा रहे हर समय खेत में
जब तक न फसल पक जाती है।
सूरज के उठने से पहले
वो पहुँच खेत में जाता है,
भारत माता का लाल वही
अपना किसान कहलाता है।
वह करे परिश्रम खेतों में
समय की मार भी सहता है,
मेहनत करता है पूरी और
संयम भी बाँधे रहता है।
बोझ जिम्मेवारियों का
अकेला वही उठाता है,
मिले न दो निवाले कभी तो
वह भूखा ही सो जाता है।
न जाने किस कलम से रचता

आजाद करो उन राहों से
किसी मंजिल पर जो न पहुँचे
वहाँ पहुँच कर क्या करना
जहाँ लगते न हो हम ऊँचें,
यूँ ही व्यर्थ की बातों में तुम
न अपना समय बर्बाद करो
पानी है सफलता जो तुमको
तो खुद को तुम आजाद करो।
पानी है सफलता जो तुमको
तो खुद को तुम आजाद करो,
मत डरो किसी मुसीबत से
अपने हौंसले को फौलाद करो,
पानी है सफलता जो तुमको
तो खुद को तुम आजाद करो।

लक्षिता सिंह
दसवीं (स)

दुष्कर उसका भाग्य विधाता,
ऋणी हो गया आज हमारे
हिंदुस्तान का अन्नदाता।
नहीं सहारा मिलता है जब
फांसी को गले लगाता है,
भारत माता का लाल वही
अपना किसान कहलाता है।
धरती माने माता समान
नित उसको शीश नवाता है,
भारत माता का लाल वही
अपना किसान कहलाता है।

प्राची पाल
VII A

ENGLISH SECTION

A TEACHER

A teacher is a beautiful gift given by god because god is a creator of the whole world and a teacher is a creator of a whole nation. A teacher is such an important creature in the life of a student, who through his knowledge, patience and love gives a strong shape to student's whole life.

PIYUSH BHATT
VII A

FRIENDSHIP

Friendship is one of the greatest bonds anyone can ever wish for. Lucky are those who have friends they can trust. Friendship is a devoted relationship between two individuals. They both feel immense care and love for each other. Usually, a friendship is shared by two people who have similar interests and feelings.

Piyush bhatt
VII A

Your Best

If you always try your best Then you'll never have to wonder About what you could have done If you'd summoned all your thunder.

And if your best

Was not as good As you hoped it would be, You still could say, "I gave today All that I had in me."

Shivangi Malik
7 A
TEACHER

Pull Your Troubles

At night before you sleep, my dears,
You must reach deep inside
And pull your troubles out of your ears
Wherein they like to hide.

A trouble is the kind of thing,
It's very often true,
That bothers you more than the soul
Who passed it on to you.

Prachi Pal
VII A

OPEN A BOOK

Open a book
And you will find
People and places of every kind,
Open a book
And you can be,
Anything you want to be,
Open a book
And you can share,
Wondrous word you find in there
Open a book.
And I will too,
You read to me,
And will read to you

Aarti
VII A

Life

What is life?

Something we live..

But just to live

Is not life..

Life has emotions

Both happy and sad

But just emotions

Is not life..

Success and failures

Is the way of life.

It makes life complete

But its just a way

Not life..

Love and respect

The main element of life

Makes us to lead life

But just this

Is not life

Then,

What is life?

We don't know

But we still live it

This question

Remains a question

That's why life is?

Sneha Tomar

XI B

Interesting Thoughts

☞ The first rule of focus is this : WHEREVER YOU ARE, BE THERE.

☞ Life is like an ice cream, enjoy it before it melts.

☞ Smile a lot, it costs nothing

☞ Youthfulness is about how vibrantly alive you are, not about when you were born

☞ Do not wait for things to happen - make them happen.

☞ Make yourself in such a way that you are always part of the solution, not the problem.

☞ A smile is the prettiest thing you can wear.

Prachi Pal
VII A

Arunachal Pradesh

Arunachal Pradesh is an Indian state in Northeast India. It was formed from the erstwhile North-East Frontier Agency (NEFA) region, and became a state on 20 February 1987. It borders the states of Assam and Nagaland to the south. It shares international borders with Bhutan in the west, Myanmar in the east, and a disputed border with China in the north at the McMahon Line. Itanagar is the state capital of Arunachal Pradesh. Arunachal Pradesh is the largest of the Seven Sister States of Northeast India by area. Arunachal Pradesh shares a 1,129 km border with China's Tibet Autonomous Region.

BHOOMIKA

X-B

संस्कृत विभाग

मम मातृभूमिः



मम मातृभूमिः

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"। मातृभूमि जन्मतः आरभ्य
मृत्युपर्यन्तम् अस्माकं रक्षणं पोषणं च करोति । 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'
इति वेदवाक्यम् अस्ति । मातृभूमिः सर्वैः नरैः वन्दनीया भवति । येन केन
प्रकारेण मातृभूमेः रक्षणं - करणीयम् ।

नाम - विधि जैन

कक्षा - ६(अ)

अनुक्रमांक - 40

साधूनां जीवनम्.....

गङ्गातीरे एकः साधुः आसीत्। सः बहु उपकारं करोति स्म। यः अपकारं करोति तस्यापि उपकारं करोति स्म। एकस्मिन् दिन सः गङ्गानद्यां स्नानं कर्तुं नदीं गतवान्। नदीप्रवाहे एकः वृश्चिकः आगतः। साधुः वृश्चिकं दृष्टवान्। तं हस्तेन गृहीतवान्। तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। किन्तु सः साधोः हस्तम् अदशत्। साधुः तं त्यक्तवान्। वृश्चिकः जले अपतत्। पुनः साधुः वृश्चिकं गृहीत्वा तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। पुनः वृश्चिकः हस्तम् अदशत्। एवम् अनेकवारं साधुः वृश्चिकं गृहीतवान्। वृश्चिक- अपि अदशत्। नदीतीरे एकः पुरुषः आसीत् । सः

उक्तवान् - साधुमहाराज। अयं वृश्चिकः दुष्टः। सः पुनः पुनः दशति। भवान् किमर्थं तं हस्ते वृथा स्थापयति। वृश्चिकं त्यजतु।

साधुः उक्तवान् - वृश्चिकः क्षुद्रः जन्तुः। दंशनं तस्य स्वभावः। सः स्वस्य स्वभावं न त्यजति। अहं तु मनुष्यः। अहं मम परोपकास्वभावं कथं त्यजामि।

यः अपकारिणाम् अपि उपकारं करोति सः एव साधुः भवति।

नाम - अपार कुमार वाष्ण्य

कक्षा-8 द

भारतं

अस्माकं देशस्य प्राचीनं नाम "भारतं" वर्तते। सम्प्रति अस्य हिन्दुस्तान, हिन्द, इण्डिया इत्यपि नामानि सन्ति। अस्य पूर्वदिशायां बर्मा देशः अस्ति। दक्षिणदिशायां लंका अस्ति। पश्चिमदिशायां अफगानिस्तानं वर्तते। उत्तरदिशायां च हिमालयः अस्ति। अस्य खण्डितः भागः पाकिस्तान इति कथ्यते।



अस्माकं देशः संसारस्य देशेषु अति पुरातनः देशः अस्ति। एतद् विश्वस्य विशालः गणतन्त्रदेशः। अयं देशः ज्ञानस्य धर्मस्य च आदिजन्मभूमिः अस्ति। अत्रैव वेदानां प्रादुर्भावः बभूव। अत्रैव मानवसभ्यता सर्वप्रथमं जन्म लेभे। इतः एव

संसारे सर्वत्र सभ्यतायाः प्रचारः बभूव। अस्य महिमा अवर्णनीयः अस्ति। अस्य गौरवम् अतुलनीयम् अस्ति।

कालिदासः



कालिदासः संस्कृतसाहित्यस्य महाकविः वर्तते। तस्य कीर्तिः न केवलं भारतवर्षे अपितु समस्ते संसारे विस्तृता अस्ति।

महाकविः कालिदासः संस्कृत साहित्ये अतीव लोकप्रियः अस्ति। जनाः तं स्वस्य प्रदेशे वास्तव्यं कथयन्ति। अस्य महापुरुषस्य स्थितिकालस्य संबंधे विविधानि मतानि सन्ति। केचित् तं गुप्तकाले ई चतुर्युगशताब्धां मन्यन्ते । अपरे विद्वांसः कथयन्ति यत् कालिदासः षष्ठ शताब्धां सम्भवत् । किन्तु विदुषा बहुमत तम् ई पूर्व प्रथम शताब्धां विक्रमादित्यस्य काले स्वीकरोति।

महाकवि कालिदासेन महाकाव्यद्वयं विरचितं कुमारसम्भवं, रघुवंशं च।

कुमारसम्भवं महाकाव्ये शिवपार्वतेः विवाहस्य, कार्तिकेयोत्पस्तेः, ताडकासुर वधस्य च कथा वर्णिता अस्ति। एषा रचना मनोहरा वर्तते।

अस्मिन् काव्ये कवेः मान्यता अस्ति यत् वास्तविकस्य स्नेहस्य उपलब्धिः तु तपस्या विना न सम्भवति।

अस्य अपरं काव्य रघुवंशं वर्तते। अस्य ऊनविंशतिः सर्गेषु रामायणस्य कथानकम् अस्ति। अस्य भाषा अपि सरला सुबोधा च वर्तते। संस्कृत भाषायाः अनेकाः ग्रन्थकाराः सुभाषितकाराश्च कालिदास रघुकारस्य नाम्ना एव जानन्ति।

कालिदासस्य शैली अद्वितीया वर्तते। स नीरसम् अप्रसिद्धं च कथानकम् अपि अति रुचिकरं करोति। अन्या सर्वतोमुखी- प्रतिभया कालिदासस्य विश्वसाहित्ये असाधारणं स्थाने विद्यते । पाश्चात्य विद्वांसः तु अस्य कवेः तुलनी शेक्सपीयर- महाभागेन कुर्वन्ति।

कालिदासेन त्रीणि रूपकाणि अपि विरचितानी मालविकाग्निमित्रे विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलं चा अभिज्ञान शाकुन्तलं सप्तांकपूर्णं श्रेष्ठं रूपकम् अस्ति। अस्मिन् दुष्यन्तस्य शकुन्तलायाश्च प्रणयस्य वियोगस्य पुनर्मिलनस्य च कथा वर्णिता वर्तते ।

कालिदासस्य ऋतुसंहारं मेघदूत गीतिका अपि विरचितम् । मेघदूतस्य अनुकरणे तु अनेकान् दूतकाव्यानां निर्माणं जातम्।

"उपमा कालिदासस्य" इति आभाणकम् अतीव प्रसिद्धम् अस्ति।

नाम= आरजू यादव

कक्षा - सप्तमी स

अनुक्रमांक - 15

श्लोकः



प्रातः काले समुत्थाय इष्टं नत्वा गुरुन् तथा।
नित्यकर्मणि संपाद्य यः पठेत् सः सुखी भवेत्॥1॥

दुराचारो हि पुरुषः लोके भवति निन्दितः।
दुःखभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च॥2॥

हस्तस्य भूषणम् दानं सत्यं कठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं शीलं सर्वस्य भूषणम्॥3॥

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्॥4॥

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्धावान् अनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति॥5॥

(सं) गुणगुण शर्मा
अष्टमी 'ब'

पिपासितः काकः



एकदा एकः काकः पिपासितः आसीत्। सः जलं पातुम् इत्सततः अभ्यसत् । परं कुत्रापि जलं न प्राप्नोत् । अन्ते सः एकं घटम् अपश्यत्। घटे स्वल्पं जलम् आसीत् । अतःसःपातुम् असमर्थः अभवत्। सः एकम् उपायम् अचिन्तयत् । सः पाषाणस्य खण्डानि घटे अक्षिपत् । एवं घटस्य जलम् उपरि आगच्छत्। काकःजलम् पीत्वा संतुष्टः अभवत्। परिश्रमेण एव कार्याणि सिध्यन्ति न तु मनोरथैः।

- अंशिका कुमारी
षष्ठी-द

□ प्रकृतिः □



प्रकृतिः माता सर्वेषाम्
बहूनाम् अपि फलानाम्
बहूनाम् अस्ति वृक्षाणाम्
पुष्पानाम् चापि मातेषम् ।

भ्रमराणां, पशूनां।

पक्षिणां च मातास्ति

जनेभ्यः जीवनं सदा

ददाति प्रकृतिः माता॥

अस्ति सा तु मनोहरी

मातृणाम् अपि मातास्ति

प्रकृतिः माता सर्वेषामम्

नमोस्तु ते माते प्रकृत्यै॥

नाम - गायत्री

कक्षा - अष्टमी 'ब'



व्याकरण सम्बन्धिदोषरहिता व्यवस्थितक्रिया कारकसमन्विता या भाषा सा संस्कृतभाषा कथ्यते ।

सम्प्रति अस्माकं देशे अनेकाः भाषाः प्रचलिताः सन्ति । यथा - हिन्दी , बंगाली , मराठी , गुजराती , उडिया , आसामी , प्रभृतयः । सर्वासां भाषाणां जननी संस्कृत भाषा अस्ति ।

संस्कृतभाषायाः एव एतासां भाषाणाम् उत्पत्तिः । अस्माकं भारतीयानां समस्तं साहित्यमपि संस्कृतभाषायामेव वर्तते ।

अस्माकं सर्व प्राचीन , ग्रन्थाश्चत्वारो वेदाः उपवेदाः वेदंगानि दर्शनशास्त्राणि , धर्मशास्त्रम् , कामशास्त्रम् , पुराणानि , उपपुराणानि , काव्यम् , नाटकेत्यादि समग्रमपि विशालं ज्ञान-विज्ञान वैभवं संस्कृतभाषायामेव निबद्धं वर्तते । जैन-धर्मस्य बौद्धधर्मस्य च महत्त्वपूर्णः ग्रन्था संस्कृत भाषायामेव लिखिताः सन्ति । कालिदासः अश्वघोषः भवभूतिः भासः माघः धन्वंन्तरिप्रभृतयोः महाकवयः संस्कृतभाषायामेव धन्याः सञ्जाताः ।

नामः कनिका भारद्वाज

कक्षाः आठवीं द

अनुक्रमांकः : 28

कंप्यूटर :



अद्यत्वे सङ्गणकस्य अर्थात् कम्प्यूटरस्य प्रचार अखिले विश्वे विलोक्यते। सङ्गणकं विना तु अद्य विश्वस्य कल्पना अपि कर्तुं न शक्यते। अन्तर्जाल-जालकार्यक्रमेण अर्थात् इन्टरनेट नेटवर्किंग क्रिया संयुक्त कम्प्यूटरंतु आश्चर्यस्य पराकाष्ठां जनयति। एतेन माध्यमेन क्षणेन एव सकलाः सूचनाः लब्धुं शक्यन्ते।

ई - मेलाख्यं माध्यमम् अवलम्ब्य वयं स्वकीयेन सङ्गणक स्व-सन्देश, चित्र, शुभकामनाः सङ्गीतादिकं वा तत्क्षणादेव स्वमित्राणां पार्श्वे प्रेषयितुं शक्नुमः । वार्तादिकम् अपि समाने एव काले कर्तुं शक्यते। सी. सी. डी. कैमरा-यन्त्रेण तु परस्परं साक्षात्कारम् अपि कर्तुं शक्नुमः । इत्यम् ई-मेलः दर्शन-श्रवणयोः आश्चर्यक माध्यमम् अस्ति।

अन्तर्जाल जालकार्यक्रमान्तर्गत वैवाख्यायां व्यवस्थायां सर्वेषां विषयाणां शब्दकोषाः, मानचित्राणि देशानां संस्कृतिः, इतिहासः, साहित्यं, यत्किमपि वा वयं

जालु वाञ्छामः तत्सर्वमपि समक्षमेव दृश्यते। सर्वाः अपि सूचनाः एतेन माध्यमेन सङ्कलिताः कर्तुं शक्यन्ते। अन्तर्जाल-जालकार्यक्रमे स्थापित सङ्गणकयन्त्र सहायतया वयं क्रीडितुमपि शक्नुमः। कार्यक्रम-गवाक्षम् (window shopping) उद्घाट्य गृहे स्थिताः अपि वयं तानि तानि वस्तूनि क्रेतुं शक्नुमः। कैमरया सङ्कलितानि चित्राणि द्रष्टुम् अन्यत्र सम्प्रेषयितुं वा समर्थाः भवामः । किमधिकं कम्प्यूटरस्य महिमा केनापि वर्णयितुं न शक्यते ।

नाम - सिद्धांत आर्य

कक्षा - नवमी

कश्चन व्याधः आसीत् । सः एकदा मृगयार्थं वनं गतवान् । बहुकालानन्तरं सः एकं वराहं दृष्टवान् । तं लक्ष्यीकृत्य सः बाणप्रयोगं कृतवान् । वराहस्य शरीरे महान् व्रणः जातः। व्रणितः वराहः कोपेन व्याधस्य उपरि आक्रमणं कृतवान् । स्वीयाभिः तीक्ष्णाभिः दंष्ट्राभिः तस्य शरीरं विदीर्णवान् । तेन व्याधः मृतः । बाणप्रहारवेदनया वराहः अपि । एव वने कश्चन शृगालः आसीत् । सः अतीव लुब्धः । सः शृगालः आहारान्वेषणं कुर्वन् तत्र एव आगतवान् । व्याधस्य वराहस्य च मृतं शरीरं सः दृष्टवान् । तत् दृष्ट्वा सः चिन्तितवान् 'अद्य मम दैवम् अनुकूलम् अस्ति । यद्येष्टम्-आहारः विनायासं लब्धः । एषः आहारः बहुदिनानां कृते पर्याप्तः भविष्यति । अतः प्रतिदिनम् अपि किञ्चिदेव खादामि' इति ।

अनन्तरं सः व्याधस्य शरीरं परिशीलितवान् । तस्य शरीरस्यपार्श्वे चापः पतितः आसीत् । चापे चर्मनिर्मिता रज्जुः बद्धः आसीत् । तत् दृष्ट्वा शृगालः 'अद्य एतां चर्मणः रज्जुं खादामि । अन्यत् सर्वं पश्चात् खादामि' इति चिन्तितवान् । चापस्य एकां कोटिं मुखे स्थापयित्वा सः दन्तैः रज्जुं जग्धवान् । परन्तु यदा रज्जुः भग्ना तदा चापस्य कोटिः शृगालस्य मस्तकं विदीर्य बहिः आगता । शृगालः तया वेदनया तत्क्षणे एव मृतः अभवत् ।

नाम - दिपाली

कक्षा - 7 'ब'

ईश्वरः यत्करोति शोभनं करोति

एकदा द्वे मित्रे निखिलः गौरवः च नगरं प्रति गच्छतः स्म। निखिलः कुशः गौरवः च लम्बः आसीत् । निखिलः अवदत् - गौरव, त्वम् ईश्वरस्य परमो भवतोऽसि। तस्य सर्वाः रचनाः दोषरहिताः इति मन्यसे। परमहम् पश्यामि यदीश्वरस्य रचना सर्वथा त्रुटिपूर्णा वर्तते। इदं क्षेत्रं पश्य। अस्मिन् क्षेत्रे कालिन्दानाम् कूष्माण्डानां च लताः वर्तन्ते। एताः लताः दुर्बलाः च सन्ति। ईश्वरः स्यूतानि फलानि आसु लतासु उत्पादयति। स्थूलेषु वृक्षेषु स जम्बू - आदीनि फलानि उत्पादयति। आश्चर्यमिदम् ईश्वरस्य इयं रचना दोषयुक्ता अस्ति। दोषदर्शी सः निखिलः शिरसा खल्वाटः आसीत्। सूर्यातपेन पीडितः सः मित्रमवदत् - मित्रवर ! एषः हरितः विशालः च वृक्षः अस्ति। यावत् सः वृक्षम् अधः अगच्छत् तावदेव खल्वाटस्य शिरसि एकम् आमफलम् अपतत्। सः पिंडरा उच्चैः अवदत् - हां! शिरसि वज्रवृषातोऽभवत् ! पुनः च तस्य मुखात् निःसृतम् - प्रभो! तव

रचना सर्वथा दोषहीना अस्ति। यदि कदाचित् अस्मिन् वृक्षे कालिन्दानि भवेयुः तर्हि मम शिरः खण्डशः भवेत्। सत्यमेव अस्ति यत्र ईश्वरः यत्करोति शोभनं करोति। तदा गौरवः अवदत् - सत्यमिदं यत् ईश्वरस्य रचना सर्वथा निर्दोषाऽस्ति, अज्ञानारणात् वयं तस्य महत्त्वम् अवगन्तुम् असमर्थाः।

नाम - निधि

कक्षा - 7 द

सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यः लभते इह सम्मानम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यः करोति देशानाम् निर्माणम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यम् कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यस्य छायायाः प्राप्तम् ज्ञानम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यः रचयति चरित्र जनानाम्

'गुरु' अस्ति अस्य पदस्य नाम

सर्वेषाम् गुरुणाम् मम शतं शतं प्रणामः ॥

शिवांगी मलिक

सप्तमी अ

FROM THE STUDENTS' BRUSH



ART COMPETITION



A FIGHT AGAINST CORONA



ART COMPETITION



WORLD ENVIRONMENT DAY



PAINTING



SPORTS DAY



NATIONAL INTEGRATION



ART



PAINTING ON OCASSION AZADI KA AMRIT MAHOTSAVA



GLIMPSE OF ACTIVITIES



VACCINATION CAMP ABOVE 15 YEARS



AZADI KA AMRIT MAHOTSAV



REPUBLIC DAY



RASHTRIYA EKTA DIWAS

STAY SAFE AND BE HEALTHY



Samsung Quad Camera
Shot with my Galaxy M51



PLEDGE TO PRESERVE EARTH AND WATER



RASHTRIYA SHIKSHA DIWAS



SHIKSHAK DIWAS

WELCOME AND SALUTATION TO VIJAY MASHAL



SURYA NAMASKAR



SWACCHTA ABHIYAN



HINDI DIWAS



DR B.R AMBEDKAR JAYANTI



GANDHI JAYANTI AND LAL BAHADUR SHASHTRI JAYANTI



AZADI KA AMRIT MAHOTSAVA



SHIKAYAT NIWARAN DIWAS WITH A VISIT OF HON'BLE DC SIR, MR C.S. AZAD



VAN MAHOTSAVA AND STARTING OF NUTRITIOUS KITCHEN GARDEN



FIT INDIA MOVEMENT-MEDITATION



CONSTITUTION DAY



RASHTRIYA EKTA DIWAS



POSHAN MAHA



CERTIFICATION OF 75 SURYA NAMASKAR

Supported by



75 Crare Surya Namaskar Certificate



Organised by



heartfulness
LIVING WITH LOVE

Naval Singh

has participated in the 750 Million Suryanamaskar challenge for 21 days organized on the auspicious occasion of the 75th anniversary of Independence of India - Azadi Ka Amrit Mahotsav.

Hon. Patrons

Kaushal Babu

Daaji
Global Guide, Heartfulness

Swami Ramdev

Swami Ramdev
President, Patanjali Yogpeeth

स्वामी गोविंद देव गिरि

Swami Govind Dev Giri
Founder, Geeta Parivar

Ekta Boudierlique

Ekta Boudierlique
Secretary

Chaitanya Kashyap

Chaitanya Kashyap
Vice President

Dr. Jaideep Arya

Dr. Jaideep Arya
President, Event Committee

Udit Sheth

Udit Sheth
Vice President

Dr. Sanjay Malpani

Dr. Sanjay Malpani
Project Director

Central Organising Committee

www.75suryanamaskar.com

Supported by



75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

75 Crere Surya Namaskar Certificate



Organised by



heartfulness

Pradeep Kumar Sharma

has participated in the 750 Million Suryanamaskar challenge for 21 days organized on the auspicious occasion of the 75th anniversary of Independence of India - Azadi Ka Amrit Mahotsav.

Hon. Patrons

Kamlesh Patel
Daaji

Global Guide, Heartfulness

Swami Ramdev

Swami Ramdev
President, Patanjali Yogpeeth

Swami Govind Dev Giri

Swami Govind Dev Giri
Founder, Geeta Parivar

Ekta Boudelique

Ekta Boudelique
Secretary

Chaitanya Kashyap

Chaitanya Kashyap
Vice President

Dr. Jaideep Arya

Dr. Jaideep Arya
President, Event Committee

Udit Sheth

Udit Sheth
Vice President

Dr. Sanjay Malpani

Dr. Sanjay Malpani
Project Director

Central Organising Committee

www.75suryanamaskar.com

Supported by



75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

75 Crere Surya Namaskar Certificate



Organised by



heartfulness

Divya Kapoor

has participated in the 750 Million Suryanamaskar challenge for 21 days organized on the auspicious occasion of the 75th anniversary of Independence of India - Azadi Ka Amrit Mahotsav.

Hon. Patrons

Kamlesh Patel
Daaji

Global Guide, Heartfulness

Swami Ramdev

Swami Ramdev
President, Patanjali Yogpeeth

Swami Govind Dev Giri

Swami Govind Dev Giri
Founder, Geeta Parivar

Ekta Boudelique

Ekta Boudelique
Secretary

Chaitanya Kashyap

Chaitanya Kashyap
Vice President

Dr. Jaideep Arya

Dr. Jaideep Arya
President, Event Committee

Udit Sheth

Udit Sheth
Vice President

Dr. Sanjay Malpani

Dr. Sanjay Malpani
Project Director

Central Organising Committee

www.75suryanamaskar.com

Supported by



75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

Orere Surya Namaskar Certificate



Organised by



heartfulness

Kusum Lata

has participated in the 750 Million Suryanamaskar challenge for 21 days organized on the auspicious occasion of the 75th anniversary of Independence of India - Azadi Ka Amrit Mahotsav.

Hon. Patrons

Kanishk Patel
Daaji
Global Guide, Heartfulness

स्वामी रामदेव
Swami Ramdev
President, Patanjali Yogpeeth

स्वामी गोविंददेवगिरि
Swami Govind Dev Giri
Founder, Geeta Parivar

Ekta Boudierlique
Ekta Boudierlique
Secretary

Chaitanya Kashyap
Chaitanya Kashyap
Vice President

Dr. Jaideep Arya
Dr. Jaideep Arya
President, Event Committee

Udit Sheth
Udit Sheth
Vice President

Dr. Sanjay Malpani
Dr. Sanjay Malpani
Project Director

Central Organising Committee

www.75suryanamaskar.com

Supported by



75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

Orere Surya Namaskar Certificate



Organised by



heartfulness

Rakesh Chandra Verma

has participated in the 750 Million Suryanamaskar challenge for 21 days organized on the auspicious occasion of the 75th anniversary of Independence of India - Azadi Ka Amrit Mahotsav.

Hon. Patrons

Kanishk Patel
Daaji
Global Guide, Heartfulness

स्वामी रामदेव
Swami Ramdev
President, Patanjali Yogpeeth

स्वामी गोविंददेवगिरि
Swami Govind Dev Giri
Founder, Geeta Parivar

Ekta Boudierlique
Ekta Boudierlique
Secretary

Chaitanya Kashyap
Chaitanya Kashyap
Vice President

Dr. Jaideep Arya
Dr. Jaideep Arya
President, Event Committee

Udit Sheth
Udit Sheth
Vice President

Dr. Sanjay Malpani
Dr. Sanjay Malpani
Project Director

Central Organising Committee

www.75suryanamaskar.com

Supported by



75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

75 Crere Surya Namaskar Certificate



Organised by



heartfulness
advancing in life

Ajay Kumar

has participated in the 750 Million Suryanamaskar challenge for 21 days organized on the auspicious occasion of the 75th anniversary of Independence of India - Azadi Ka Amrit Mahotsav.

Hon. Patrons

Kamlesh Patel
Daaji

Global Guide, Heartfulness

Swami Ramdev

Swami Ramdev
President, Patanjali Yogpeeth

स्वामी गोविंद देव गिरि

Swami Govind Dev Giri
Founder, Geeta Parivar

Ekta Boudierique
Ekta Boudierique
Secretary

Chaitanya Kashyap
Chaitanya Kashyap
Vice President

Dr. Jaideep Arya
Dr. Jaideep Arya
President, Event Committee

Udit Sheth
Udit Sheth
Vice President

Dr. Sanjay Malpani
Dr. Sanjay Malpani
Project Director

Central Organising Committee

www.75suryanamaskar.com

Supported by



75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

75 Crere Surya Namaskar Certificate



Organised by



heartfulness
advancing in life

Rajeev Kumar

has participated in the 750 Million Suryanamaskar challenge for 21 days organized on the auspicious occasion of the 75th anniversary of Independence of India - Azadi Ka Amrit Mahotsav.

Hon. Patrons

Kamlesh Patel
Daaji

Global Guide, Heartfulness

Swami Ramdev

Swami Ramdev
President, Patanjali Yogpeeth

स्वामी गोविंद देव गिरि

Swami Govind Dev Giri
Founder, Geeta Parivar

Ekta Boudierique
Ekta Boudierique
Secretary

Chaitanya Kashyap
Chaitanya Kashyap
Vice President

Dr. Jaideep Arya
Dr. Jaideep Arya
President, Event Committee

Udit Sheth
Udit Sheth
Vice President

Dr. Sanjay Malpani
Dr. Sanjay Malpani
Project Director

Central Organising Committee

www.75suryanamaskar.com

Supported by

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

Orere Surya Namaskar
Certificate

Organised by

Dalip Kumar

has participated in the 750 Million Suryanamaskar challenge for 21 days organized on the auspicious occasion of the 75th anniversary of Independence of India - Azadi Ka Amrit Mahotsav.

Hon. Patrons

 Daaji Global Guide, Heartfulness	 Swami Ramdev President, Patanjali Yogpeeth	 Swami Govind Dev Giri Founder, Geeta Parivar		
 Ekta Boudierique Secretary	 Chaitanya Kashyap Vice President	 Dr. Jaideep Arya President, Event Committee	 Udit Sheth Vice President	 Dr. Sanjay Malpani Project Director

Central Organising Committee

www.75suryanamaskar.com

This e-magazine NAI DISHA is now for you.

THANKING YOU

JAI HIND